ओ३म्

# ‘मेरा धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाष ।’

**–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून**

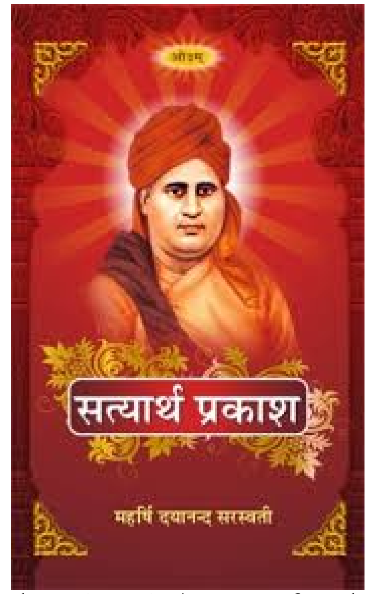


मनुश्य मननष ीील प्राणी को कहते हैं जो मनुश्य योनि में जन्म लेकर भी मनन नहीं करता और परम्परागत विचारधारा व मान्यताओं को आंख बन्द कर स्वीकार करता है ऐसे मनुश्य की आकृति वाले प्राणी को अनेक अविवेकपूण परम्पराओं के बुद्धि और तर्क संगत अर्थात् सत्य पर आधारित न होने के कारण मनुश्य अर्थात् सत्यासत्य विवेकी मनुश्य नहीं मान सकते मनुश्य जीवन का महत्व तभी है जब मनुश्य किसी भी मान्यता को स्वीकार करने से पहले उसकी सत्यता अर्थात् यथार्थता को जान ले और सत्य होने पर ही उसका आचरण करें जो मनुश्य ऐसा करते हैं वह धन्य होते हैं और जो ऐसा नहीं करते अर्थात् असत्य व अविवेकपूर्ण परम्पराओं व मान्यताओं का निर्वाह करते हैं, वह मनुश्य होकर भी अपने पूर्व जन्मों के षुभ कर्मों से प्राप्त सर्वोत्तम मनुश्य जीवन को वृथा गंवाते हैं ऐसे मनुश्यों के सम्पर्क में जो आता है उनका जीवन भी उन जैसा ही होने की संभावना रहती है जिससे वह मनुश्य अपना जीवन तो वृथा करता ही है, अपनी सन्ततियों एवं अन्यों का जीवन भी वृथा करने का पाप अपने सिर पर लेता हैं अतः सभी मनुश्यों, धर्माचार्यों, मताचार्यों और बुद्धिजीवियों का कर्तव्य है कि वह निश्पक्ष होकर सत्यासत्य की परीक्षा कर सत्य को ही स्वीकार करें और असत्य का न केवल तिरस्कार वा त्याग ही करें, चाहें वह बड़े से बड़े महापुरुश व युगपुरुश द्वारा प्रवर्तित ही क्यों न हो, अपितु इसके साथ साथ उसका खण्डन व प्रचार कर दूसरे लोगों को भी पाप के कूप में गिरने से बचाना चाहियें

मनुश्य जब जन्म लेता है तो उसे किसी भाशा का ज्ञान नहीं होता है, अन्य विशयों के ज्ञान होने का तो प्रष न ही नही होतां सबसे पहले वह अपनी माता से उसकी भाशा, मातृभाशा, को सीखता है जिसे आरम्भिक जीवन के दो से पांच वर्श तो नयूनतम लग ही जाते हैं इसके बाद वह भाशा ज्ञान को व्याकरण की सहायता से जानकर उस पर धीरे धीरे अधिकार करना आरम्भ करता हैं भाशा सीख लेने पर वह व्यक्ति उस भाशा की किसी भी पुस्तक को जानकर उसका अध्ययन कर सकता हैं संसार में मिथ्या ज्ञान व सद्ज्ञान दोनों प्रकार के ग्रन्थ विद्यमान हैं मिथ्या ज्ञान की पुस्तकें, भले ही वह धार्मिक हों या अन्य, उसे असत्य व जीवन के लक्ष्य से दूर कर अष ुभ कर्म वा पाप की ओर ले जाती हैं सद्ग्रन्थों में ही यह षाक्ति होती है कि वह मनुश्य को उसके जीवन के लक्ष्य सहित जीवन निर्वाह के लिए कृशि, वाणिज्य, चिकित्सा, भवन निर्माण, अध्यापन, ज्ञान–विज्ञान के प्रचार व प्रसार सहित लोगों को न्याय दिलाने व किसी से होने वाले अन्याय को दूर करने की षि ाक्षा व ज्ञान को प्रदान करती हैं जो व्यक्ति सद्ज्ञान को प्राप्त हो जाता है उसके जीवन का कल्याण होता है और जो मिथ्याज्ञान वाले जाल ग्रन्थों में फंस जाता है उसका जीवन नश्ट व बर्बाद हो जाता हैं अतः जीवन में स्वार्थी, लोभी, धर्मान्ध, मतान्ध, अज्ञानी, दुश्कर्मियों आदि के चक्र में नहीं फंसना चाहियें आजकल यह सब लोगों को अपनी अपनी ओर खींचने में लगे हुए हैं मनुश्य को सद्ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त अपनी ज्ञान की आंखों से वस्तुओं व मान्यताओं की परीक्षा करनी चाहिये और तर्क की कसौटी पर सत्य बातों को ही स्वीकार करना चाहिये जैसा कि स्वामी दयानन्द व उनके अनुयायी करते हैं

संसार के साहित्य पर दृश्टि डालें तो विष व के समग्र साहित्य में **‘सत्यार्थप्रकाष ।’** के समान सत्य मान्यताओं व धर्माधर्म, कर्तव्याकर्तव्य, ईष वरोपासना, यज्ञ–अग्निहोत्र व अन्य सभी विशयों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कराने वाला कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं हैं सत्यार्थप्रकाष । को सामान्य व्यक्ति भी पढ़कर उसके मूल भावों को जान

सकता है व उन्हें आत्मसात कर सकता हैं आप विष व का साहित्य पढ़ लीजिए और सत्यार्थप्रकाष ा पढ़ लीजिए, सत्यार्थप्रकाष ा सब पर भारी पड़ता हैं ईष वर का सत्य व यथार्थ स्वरूप, जीवात्मा का स्वरूप, प्रकृति का स्वरूप व सृश्टि विशयक ज्ञान की आवष यकता हो तो एक बार सत्यार्थप्रकाष ा अवष य पढें आज हमारे वह महापुरुश जिनकी हमारे भाई–बन्धु पूजा करते हैं, जीवित होते तो वह सत्यार्थप्रकाष ा की महिमा का अवष य गान व प्रचार करतें सत्यार्थप्रकाष ा एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें सभी मान्यतायें वेदों की मान्यताओं के अनुरुप व उसकी पोशक हैं जन्म से मृत्यु तक के प्रायः सभी व्यवहारों पर प्रामाणिक जानकारी सत्यार्थप्रकाष ा ग्रन्थ में प्राप्त होती हैं आईये, सत्यार्थप्रकाष ा में वर्णित कुछ विशयों पर एक दृश्टि डाल लेते हैं सत्यार्थप्रकाष ा में सत्यार्थप्रकाष ा के लेखन का प्रयोजन, ईष वर नाम व्याख्या, मंगलाचरण समीक्षा, बाल षि ाक्षा विशय, भूतप्रेत आदि निशेध, जन्म पत्र सूर्यादि ग्रह समीक्षा, अध्ययन अध्यापन विशय, गुरुमंत्र वा गायत्री मंत्र की व्याख्या, प्राणायाम षि ाक्षा, सन्ध्या अग्निहोत्र उपदेष ा, उपनयन समीक्षा, बह्मचर्य उपदेष ा, पठन पाठन की विधि, ग्रन्थ प्रमाण अप्रमाण विशय, स्त्री–षूद्र अध्ययन विधि व वेदाध्ययन में इनका अधिकार, दूर देष ा में विवाह से लाभ, अल्प वय में विवाह का निशेध, गुण कर्म अनुसार वर्ण व्यवस्था, स्त्री पुरुश व्यवहार, पंच महायज्ञ, पाखण्ड तिरस्कार, प्रातः जागरण, गृहस्थ धर्म उपदेष ा, पण्डित व मूर्ख के लक्षण, पुनर्विवाह व नियोग विशय, वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम विधि, राजधर्म विशय, दण्ड व्यवस्था, 18 व्यसनों का निशेध, युद्ध करने के प्रकार, राश्ट्र रक्षा की विधि, कर ग्रहण प्रकार, ईष वर विशय, ईष वर स्तुति प्रार्थना उपासना, ईष वर ज्ञान प्रकार, ईष वर का अस्तित्व, जीवात्मा की स्वतन्त्रता, ईष वर व जीव में भिन्नता, ईष वर की सगुण व निगुण उपासना, वेद विशय विचार, सृश्टि उत्पत्ति आदि विशय, मनुश्यों की आदि सृश्टि के स्थान का निर्णय, ईष वर द्वारा जगत का धारण, विद्या–अविद्या–बन्धन–मोक्ष विशय, आचार–अनाचार–भक्ष्य–अभक्ष्य विशय आदि अनेकों विशयों का विष ाद वर्णन हैं सत्यार्थप्रकाष ा पढ़कर इन सभी विशयों का यथार्थ ज्ञान उपलब्ध होता हैं यह समस्त ज्ञान विष व के किसी एक ग्रन्थ में एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होतां सत्यार्थ प्रकाष ा के अन्त के चार अध्यायों में भारतवर्शीय मत–मतान्तरों सहित नास्तिक वाममार्गियों, चार्वाक, बौद्ध, जैन, ईसाई व मुस्लिम मत की समालोचना भी पाठकों के लिए सत्य व असत्य का सरलता से निर्णय करने के लिए दी गई हैं इस ग्रन्थ का अध्ययन कर मनुश्य सत्य धर्म, सत्य मान्यताओं एवं विचारधारा का निर्णय कर सकता हैं

सत्यार्थप्रकाष ा का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि मनुश्य को प्रातःकाल लगभग चार बजे षाय्या का त्याग कर देना चाहियें षौच से निवृत होकर वायुसेवन के लिए जाना चाहिये, व्यायाम व प्राणायाम आदि कर ईष वर का ध्यान 'सन्ध्योपासना' व दैनिक अग्निहोत्र करना चाहियें गृहस्थ के व्यवहारों सहित बच्चे, बड़ों व वृद्धों के कर्तव्यों का ज्ञान भी सत्यार्थप्रकाष ा सहित ऋशि दयानन्द के अन्य ग्रन्थों में प्राप्त होता हैं परोपकार, वृद्धों की सेवा, पात्रों को दान, देष ाभक्ति, अन्धविष वासों के प्रति उपेक्षा भाव की षि ाक्षा भी सत्यार्थप्रकाष ा पढ़कर मनुश्य को प्राप्त होती हैं देष ा के इतिहास विशयक अनेक तथ्यों का ज्ञान सत्यार्थप्रकाष ा से होता है जो अन्यथा नहीं होतां सत्यार्थप्रकाष ा ऐसा ग्रन्थ है जिसने देष ा में वैदिक सनातन धर्म व पौराणिकों की रक्षा की हैं सत्यार्थप्रकाष ा ऐसा ग्रन्थ है जिसने अन्य सभी मतों को उनके धर्म व मत का यथार्थ स्वरूप भी बताया है जो कि वैदिक धर्म से किंचित भी अच्छा नहीं हैं सत्यार्थप्रकाष ा वेदों की प्रत्येक मान्यता व सिद्धान्त को बुद्धि की कसौटी पर कस कर उसे तर्क व सृश्टि क्रम के अनुरूप सिद्ध करता है और उसे ही मानने का प्रचार करता हैं देष ा की आजादी और देष ा से छुआछूत, जन्मना जातिवाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिश, मृतक श्राद्ध व सभी अवैदिक मान्यताओं का सत्य स्वरूप सत्यार्थप्रकाष ा देष ा व विष व के लोगों के सामने रखता है और सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने की प्रेरणा करता हैं सत्यार्थप्रकाष ा ने देष ा में चल रहे ईसाई व मुस्लिम धर्मान्तरण पर सत्य के प्रचार व वैदिक धर्म की श्रेश्ठता दष ाी कर उस पर किंचित अंकुष ा लगाया हैं देष ा को आजाद कराने का मूल मंत्र भी स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाष ा सहित अपने अन्य ग्रन्थों में दिया हैं

सत्यार्थ प्रकाष ा ग्रन्थ संसार में सूर्य के समान है जो अज्ञानान्धकारजनित असत्य, मिथ्या मान्यताओं व अन्धविष वासों को दूर कर सत्य मान्यताओं का प्रकाष ा करता हैं सत्यार्थ प्रकाष ा की षारण में आने वाला मनुश्य आत्मा व ईष वर के यथार्थ स्वरूप को जानकर ईष वरोपासना व वैदिक कर्तव्यों के पालन से अष ुभ कर्मों को छोड़कर षुभ वा पुण्य कर्मों को करके व स्वाध्याय करके अविद्या से छूट कर मोक्ष को प्राप्त होता हैं

यह लाभ संसार के किसी अन्य मत का अनुकरण व अनुसरण करने से प्राप्त होना बुद्धि व तर्क से सिद्ध नहीं होतां अतः दुःखों से सर्वथा मुक्ति चाहने वाले मनुश्यों को दुःखों से निवृत होने, जीवन में अभ्युदय को प्राप्त होने तथा मृत्योत्तर जीवन में जन्म व मरण के चक्र से छूट कर मोक्ष को प्राप्त करने के लिए सत्यार्थप्रकाष ा तथा वेदों की ष ारण में आना चाहियें जो आयेगा वह लाभान्वित होगां जो नहीं आयेगा, वह मत–मतान्तरों में भटकेगा तो उसे अविद्या से होने वाली हानियों को सहन करना होगां ईष वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ, सर्वष ाक्तिमान, न्यायकारी, जन्म व मृत्यु का देने वाला हैं कोई भी मनुश्य उसके न्याय से बच नहीं सकतां अतः सत्यार्थप्रकाष ा को पढ़कर अपने जीवन का निर्णय स्वयं लें सत्यार्थप्रकाष ा पढ़े और उसके बाद दुनियां के सारे मत–पन्थों के धर्म ग्रन्थों को पढ़ें, कोई आपत्ति नहीं हैं सत्य को जान लेने के बाद असत्य का प्रभाव नहीं होतां जिसे अपनी आत्मा की उन्नति व उससे होने वाले लाभों का ज्ञान है वह सत्य को ही स्वीकार करता है और असत्य को विश जानकर उसी प्रकार से छोड़ देता है जैसे की विश मिले हुए अन्न को साधारण मनुश्य भी छोड़ देता है, उसे खाता नहीं हैं

सत्यार्थ प्रकाष ा के महत्व के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता हैं सत्यार्थप्रकाष ा को पढ़कर वेदों का तात्पर्य विदित हो जाता हैं वेदों को अवष य पढ़ना चाहियें वेदों का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना सुनाना सब मनुश्यों वा आर्यों का परम धर्म हैं जो इसका पालन करते हैं वह अविद्या से दूर होकर विद्या व कर्मोपासना से मोक्ष वा मुक्ति को प्राप्त होकर अपने जीवन को सफल करते हैं सत्यार्थप्रकाष ा आज आधुनिक मनुश्यों सभी का धर्मग्रन्थ हैं यह ऋशि दयानन्द द्वारा वेद मन्थन से प्राप्त नवनीत के समान हैं एक बार सबको सत्यार्थप्रकाष ा को समझकर इसका अवष य अध्ययन करना चाहिये जिससे मृत्यु के समय व बाद में पछताना न पड़ें स्वयं तो सत्यार्थ प्रकाष ा पढ़े ही, साथ ही दूसरों को पढ़ाकर भी पुण्य का भागी होना चाहियें ओ३म् ष ाम्

**–मनमोहन कुमार आर्य**
**पताः 196 चुक्खूवाला–2**
**देहरादून–248001**
**फोनः09412985121**